P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-12* August- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ख़्याल गायकी के पुरोधा उस्ताद अमीर खाँ

Ustad Amir Khan, The Father of Khyal Singing

Paper Submission:15/08/2021, Date of Acceptance:24/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

रौशन भारती
सह आचार्य,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा,
राजस्थान, भारत

सारांश

ख़्याल का प्रचलन 18वीं शताब्दी में ही हुआ। इससे पहले ख़्याल गायन के पुख्ता प्रमाण नहीं मिलते। ख़्याल गायकी की उत्पत्ति में सबसे सर्वमान्य मत मोहम्मद शाह रंगीले के दरबार से माना जाता है। मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक नियामत (सदारंग) और फिरोज खाँ (अदारंग) ने बहुत सारे ख़्याल की रचना की, परन्तु सदारंग व अदारंग ख़्याल गाते नहीं थे। सदारंग और अदारंग ने कुछ ध्रुपद भी ख़्याल गायकी के तर्ज पर बनाए थे।

जैसे-जैसे ख़्याल गायकी का विकास हुआ वैसे-वैसे इसमें नए-नए नवाचार जुड़ते गए। प्रारम्भ में ख़्याल गायन जो सिर्फ तानकारी पर निर्भर था, आलाप की तरफ बढ़ता गया। प्रारम्भ में लय मध्यलय व द्रुतलय थी जो बाद में विलम्बित की तरफ बढ़ता गया और ध्रुपद से अलग हटकर ख़्याल का एक प्रमुख स्वरूप समाज में आ गया।

उस्ताद अमीर खाँ के समय तक यूं तो ख़्याल गायकी अपनी चरम सीमा पर थी परन्तु खाँ साहब के संगीत की दुनिया में एक नई प्रतिभा के रूप में उभर रहे थे, तो उस समय तक गायन भी पहले से चले आ रहे ख़्याल गायन की तरह ही, मध्यलय, द्रुतलय व तानकारी पर ही आधारित रहा, जो इनके हंसध्वनि के 78 rpm अडाना के 78 rpm रिकोर्डिंग सुनकर पता लगाया जा सकता है।

परन्तु जैसे-जैसे अमीर खाँ अलग-अलग घरानों के कलाकारों के सम्पर्क में आ तो उनके गाने पर उनका प्रभाव पड़ता गया और उनके ख़्याल गायन में परिवर्तन आता गया जिनमें क्रमशः उस्ताद रजब अली खाँ की तान का तरीका, उस्ताद अमान अली खाँ व सरगम का तरीका व उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के विलम्बित आलाप व राग बढ़त का तरीव आदि प्रमुख है।

1950 के दशक के बाद उस्ताद अमीर खाँ ने ख्याल गायकी में बहुत से परिवर्तन किए और ख़्याल गायकी को नया आयाम दिया और जो तरीका ख़्याल गायकी का उन्होंने बनाया आज भी वही तरीका सब अनुसरण कर रहे हैं।

The practice of khyal started only in the 18th century. Prior to this, there is no solid evidence of Khyal singing. The most widely accepted view of the origin of Khyal singing is believed to be from the court of Mohammad Shah Rangeel. Mohammad Shah Rangee's court singers Niyamat (Sadarang) and Firoz Khan (Adarang) composed many khyals, but Sadarang and Adarang did not sing khyals. Sadarang and Adarang also composed some dhrupads on the lines of khyal singing.

As Khyal singing developed, new innovations were added to it. Initially, khyal singing, which was dependent only on tankari, progressed towards aalap. In the beginning the rhythm was Madhyalaya and Drutalaya, which later progressed towards Vilambit and separated from Dhrupad and became a major form of Khyal in the society.

By the time of Ustad Amir Khan, although Khyal singing was at its peak, but Khan Saheb was emerging as a new talent in the world of music, so by that time singing was also like Khyal singing which was already going on, Madhyalaya was based on drutala and tankari, which can be ascertained by listening to the 78 rpm recording of the Adana's 78 rpm recording of their swans.

But as Amir Khan came in contact with artists from different

families, his songs became influenced by him and his khyal singing changed. In which respectively Ustad Rajab Ali Khan's method of taan, Ustad Aman Ali Khan's gamut method and Ustad Abdul Waheed Khan's delayed alap and raga edge method etc. are prominent.

After 1950s, Ustad Amir Khan made many changes in Khyal singing and gave a new dimension to Khyal singing and the method he created for Khyal singing is still following the same method.

मुख्य शब्द / Keywords लय, मात्रा, ठेका, MM।
Rhythm, Volume, Contract, MM.

प्रस्तावना

ख़्याल गायकी के विकास के प्रारम्भिक स्वरूप को देखें तो पता चलता है कि प्रारम्भ में ख़्याल गायन चंचल और द्रुत प्रकृति का होता था, जो समय के साथ अपनी पहचान बनाता गया और द्रुत से मध्यलय और विलम्बित लय तक आ गया।

ख़्याल गायकी को प्रसिद्धि 19वीं शताब्दी के अन्त और 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिलने लगी और इसका श्रेय उस्ताद अल्लादिया खाँ, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, उस्ताद फैयाज खाँ, केसर बाई केरकर, उस्ताद अमान अली खाँ, उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ आदि संगीतज्ञों को जाता है। 20वीं शताब्दी में ख़्याल गायकी ने संगीत जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

उस्ताद अमीर खाँ के समय ख़्याल गायकी अपने चरम पर थी। उस्ताद अमीर खाँ ने गायकी को और परिष्कृत किया और ख़्याल गायन को नई दिशा दी। खाँ साहब ने विलम्बित लय को और धीमा कर दिया और अतिविलम्बित लय को अपनाया। इसके अलावा सरगम करने का तरीका, गंभीर आलापचारी तथा किलिष्ठ तानों के प्रयोग ने ख़्याल गायन के स्वरूप को नई दिशा दी। उस्ताद अमीर खाँ द्वारा ख़्याल गायकी के प्रत्येक पक्ष में परिवर्तन किया गया जैसे लय को अतिविलम्बित किया गया, आलाप को अधिक गंभीर अर्थपूर्ण बनाया गया तथा इसके अलावा सरगम तथा तान के प्रयोग में भी परिवर्तन कर खाँ साहब ने ख़्याल गायकी का नया तरीका प्रस्तुत किया जिसे पूरे संगीत जगत में अद्वितीय माना गया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि ख़्याल गायकी का स्वरूप प्राचीन समय से वर्तमान समय तक किस प्रकार परिवर्तित हुआ है। प्राचीन समय में ख़्याल गायकी जो द्रुतलय पर आधारित थी, समय के साथ-साथ गंभीर होती गई और तात्कालिक ख़्याल गायकों द्वारा परिवर्तन करके ख़्याल गायन को नई दिशा मिली।

इस लेख में बताया गया है कि उस्ताद अमीर खाँ साहब ने ख़्याल गायकी के स्वरूप को परिवर्तित करके क्रमशः अतिविलम्बित लय, बन्दिश के शब्द उच्चारण पर विशेष बल, सरगम का अनूठा प्रयोग, झूमरा ताल का प्रयोग आदि के द्वारा ख़्याल गायन को नई दिशा दी और ख़्याल गायकी को नया स्वरूप प्रस्तुत किया।

ख़्याल गायन के इस नए स्वरूप ने भारतीय संगीत जगत में अपनी पहचान बनाई और वर्तमान समय में आज भी सभी संगीतकार ख़्याल गायकी के इस स्वरूप को अपना रहे हैं।

इस शोध पत्र के माध्यम से यह बताया जा रहा है कि उस्ताद अमीर खाँ ने ख़्याल गायन का नया स्वरूप विकसित किया और इसे गंभीर बनाया।

साहित्यावलोकन

उस्ताद अमीर खाँ द्वारा ख्याल गायकी में अतिविलम्बित लय के प्रयोग को लेकर कई शोधकर्ताओं के द्वारा भी शोध किया जा चुका है। शोधकर्ताओं के शोध में अतिविलम्बित लय पर उस्ताद अमीर खाँ द्वारा किए गए अनूठे प्रयोग पर ध्यान दिया गया है। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किए गए शोध का साहित्यावलोकन इस भाग में प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. तेजपाल सिंह (2005) और प्रेरणा अरोड़ा (2005), इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय पर प्रकाश डाला है। इनके अनुसार उस्ताद अमीर खाँ के गंभीर स्वभाव के कारण अतिविलम्बित लय में गायन खाँ साहब के लिए सहजतापूर्ण था। अतिविलम्बित लय में गायक अपने विचारों को सही रूप से स्थापित कर सकता है। जिससे बार-बार गायक को सम पर आने की जल्दी नहीं होती है। जिससे गायक अपनी कल्पना को अधिक ऊँचाईयों तक उड़ान भरने के लिए इस लय का प्रयोग कर सकते हैं।
2. डॉ0 इब्राहिम अली (2011) इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ को स्वरों के ठहराव व अपनी कल्पना से राग बढ़त द्वारा अतिविलम्बित लय में गायन सुविधाजनक होता था। लय को अतिविलम्बित करने से ताल के बोलों के बीच अन्तराल बढ़ने से स्वर और अधिक प्रभावी बन जाता है। अतः उस्ताद अमीर खाँ की सोच व गंभीर प्रकृति ने ही लय को विलम्बित से अतिविलम्बित कर दिया।
3. पं0 अमरनाथ (2008), पं0 अमरनाथ खाँ साहब के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। पं0 अमरनाथ ने अपने लेखक में उस्ताद अमीर खाँ के स्वभाव प्रवृत्ति तथा स्वरों के प्रति लगाव के द्वारा ख्याल गायकी में किए गए नवाचारों के बारे में विस्तृत रूप से लिया गया है। उस्ताद अमीर खाँ के गायन का मध्यलय या विलम्बित लय से अतिविलम्बित लय पर आने का प्रमुख कारण उनकी सोच रही है। उस्ताद अमीर खाँ ने अपनी सोच को अपनी गायकी में समावेशित कर ख्याल को नया रूप दिया।
4. अजीत सिंह पेंतल (1996) इन्होंने अपने लेख भारतीय संगीत में उस्ताद अमीर खाँ की गायकी पर सूक्ष्म अध्ययन किया और उनके ख्याल गायकी के नवाचारों के बारे में विस्तृत लेख लिखा। अजीत सिंह पेंतल ने उस्ताद अमीर खाँ के द्वारा ख्याल गायकी में किए गए परिवर्तन जैसे अतिविलम्बित, सरगम, तराना आदि के बाद में विस्तृत चर्चा की है।
5. WIM VANDER MEER (1980), ने अपनी पुस्तक ^^Hindustani Music in 20th Century** में ख्याल गायकी में प्रयुक्त विभिन्न लय और समय का अध्ययन किया और बताया कि विलम्बित लय में प्रति सैकण्ड ठहराव उस्ताद अमीर खाँ से पहले कितना था और उनके बाद यह ठहराव किस तरह बदल गया। इन्होंने अपनी पुस्तक में बताया कि 20 सदी तक विलम्बित लय 35 MM प्रति मात्रा से कम नहीं रही। उस्ताद अमीर खाँ ने इस लय को और धीमा किया और अतिविलम्बित लय की स्थापना की।
6. पं. अमरनाथ (2020) ने अपनी पुस्तक ^^The Dictionary of Hindustani Classical Music **में बताया कि उस्ताद अमीर खाँ ने मीर खण्ड का प्रयोग आलाप में किया और आलाप में राग के चलन के अनुसार स्वर समूहों के प्रयोग द्वारा अतिविलम्बित लय में मीर खण्ड के प्रयोग को और प्रभावी बनाया।
7. सरस्वती रमन (2014) ने अपनी पुस्तक ^^The Mystery of Sound** में बताया कि इन्दौर घराने के उस्ताद अमीर खाँ ने ख्याल झूमरताल में अतिविलम्बित लय में गाए है। उस्ताद अमीर खाँ के चिन्तनशील स्वभाव के कारण अतिविलम्बित लय गायन के परिप्रेक्ष्य से अनुकूल थी।

अतिविलम्बित लय: 1950 के दशक तक उस्ताद अमीर खाँ भी मध्यलय में ही मिलता है, परन्तु अब्दुल वहीद खाँ से मिलने के बाद उन्होंने विलम्बित लय को और विलम्बित करके अतिविलम्बित कर दिया। सामान्य बोलचाल की भाषा में इस अतिविलम्बित लय को एकताल में 48 मात्रा व झूमरा में 56 मात्रा के नाम से भी जाना जाता है। उस्ताद अमीर खाँ लय को अतिविलम्बित करने वाले पहले गायक थे।

पी.एल.शर्मा के द्वारा जनवरी 1973 में एक साक्षात्कार में बताया कि 20वीं सदी तक विलम्बित लय 36उउ मात्रा प्रति से कम नहीं रही। अर्थात् विलम्बित लय को ठेका एक मिनट में 36 मात्रा से कम लय उस समय तक नहीं थी।

उस्ताद अमीर खाँ के राग मारवा के विलम्बित झूमरा में 14 मात्रा का एक चक्र पूरा होने में 1 मिनट 10 सेकण्ड का समय लग रहा है। जिसको 12 mm बोला जा सकता है, अर्थात् एक मिनट के आवर्तन में सिर्फ 12 मात्रा ही है, जिसके ठहराव का समय प्रति मात्रा 5 सेकण्ड है जो कि अब्दुल वहीद खाँ की विलम्बित लय से दुगुना है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि अब्दुल वहीद खाँ ने झूमरा में जो लय प्रयोग में ली, उस्ताद अमीर खाँ ने उस लय को आधा करके अतिविलम्बित बना दिया।

इसी प्रकार राग माल्कोंस में झूमरा में अतिविलम्बित का चक्र 1 मिनट 6 सेकण्ड में पूरा हो रहा है, जिसे 12.7mm कहा जा सकता है अर्थात् प्रति मात्रा पर ठहराव ¼66/14 = 4.7sec½ 4-7 सेकण्ड है। राग दरबारी में भी झूमरा की लय यही रखते हुए उसका ठहराव भी प्रति मात्रा 4.7 सेकण्ड है।

बन्दिश के शब्द का उच्चारण पर विशेष ध्यान: उस्ताद अमीर खाँ ख्याल गायकी को सच में नया स्वरूप, नई दिशा देना चाहते थे, उन्होंने न केवल बन्दिश के बोलो को स्पष्ट रूप से उच्चारित किया बल्कि उनके द्वारा बनाए गए अनेक तरानों व बन्दिशों में अरबी, फारसी के बोलो का अर्थ भी उनके द्वारा बताया गया। जिससे श्रोताओं को उनका अर्थ समझ आ सके। जिससे श्रोता ख़्याल गायकी से जुड़ सके और बन्दिशों के अर्थ को समझ सके।

सरगम का अनूठा प्रयोग: उस्ताद अमीर खाँ ने सरगम बोलने या प्रस्तुत करने के तरीके में बहुत बदलाव किए, जिनमें विलम्बित लय में फ्रेज स्वर समूह की सरगम को गायकी अंग से प्रस्तुत करना, सरगम को सुरीली स्वरावली के रूप में प्रस्तुत करके श्रोताओं के लिए कर्णप्रिय बनाया। मेरूखण्ड का प्रयोग उस्ताद अमीर खाँ के समय से भी पहले से होता आ रहा है, परन्तु उस्ताद अमीर खाँ ने मेरूखण्ड के प्रयोग से सरगम का प्रयोग किया वो पूरी तरह से बाकी कलाकारों से अलग है। उनके इस अनूठे प्रयोग ने संगीत जगत में खाँ साहब को नई पहचान दी। जिसने ख़्याल गायकी को एक अलग आयाम तक पहुँचाया। संगीत जगत में अतिविलम्बित लय में सरगम का गायकी अंग से प्रयोग पहली बार हुआ था।

1. झूमरा ताल का प्रयोग: झूमरा ताल में 14 मात्रा होने के कारण अतिविलम्बित लय में उस्ताद अमीर खाँ साहब को आलाप, राग बढ़त, सरगम व तान में सहजता रही होगी। यहाँ पर एक प्रमुख प्रश्न यह उठता है कि झूमरा के स्थान पर तीनताल व तिलवाड़ा ताल का भी प्रयोग कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि तिलवाड़ा और तीनताल में अतिविलम्बित गाने से समय में अनावश्यक वृद्धि होती, जहाँ उस्ताद अमीर खाँ को झूमरा ताल का आवर्तन पूरा करने में 1 मिनट 10 सेकण्ड लग रहे हैं, वहीं तिलवाड़ा व तीनताल में यह समय 1 मिनट 20 सेकण्ड बढ़ जाएगा, जिससे आवर्तन अनावश्यक लम्बा हो जाएगा। जिससे गायन में रस खत्म हो जाएगा।
2. उस्ताद अमीर खाँ के गायन को सुनने पर लगता है कि झूमरा की 14 मात्राएँ उनके गायन के लिए उचित थी। झूमरा में एक और खूबी यह भी है कि इस ताल का चलन झूम की चलने जैसा है। जिससे गायन के समय राग बढ़त में रंजकता बनी रहती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायकी के अन्तर्गत हुए परिवर्तनों पर विशेष प्रकाश डालता है। इस लेख में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा ख़्याल गायकी में किए गए परिवर्तन और उसके द्वारा ख़्याल गायकी को संगीत जगत में मिली नई पहचान के बारे में बताया गया है।

ख़्याल गायकी में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा किए गए नए प्रयोगों पर आधारित इस लेख को संगीत जगत के विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाना चाहिए, जिससे वह ख़्याल गायकी के स्वरूप को समझ सके।

इस अनुसंधान में ख़्याल गायकी के प्रत्येक पक्ष को उदाहरण के माध्यम से समझाया गया है। जो स्पष्ट रूप से यह बताते हैं कि किस तरह उस्ताद अमीर खाँ खाँ ने ख़्याल गायकी को गंभीर और अद्वितीय बनाया। खाँ साहब द्वारा ख़्याल गायकी में किए गए नए आविष्कारों ने ख़्याल गायन को नई दिशा दी। जिसे वर्तमान समय का प्रत्येक कलाकार अपना रहा है। जो संगीत जगत में एक अद्वितीय व सार्थक प्रयोग है।

अतः उस्ताद अमीर खाँ को ख़्याल गायकी का पुरोधा कहकर बुलाया जा सकता है। जिन्होंने सच में ख़्याल गायकी को नए रूप में दुनिया के सामने रखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह तेजपाल, अरोड़ा प्रेरणा, (2005), "संगीत के देदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर खाँ: जीवन एवं रचनाएँ" ISBN : 978-81-7391-718-3 कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पेज न. 198*
2. *अली इब्राहिम, (2011), "USTAD AMIR KHAN : Life and Contribution to Indian Classical Music", ISBN: 3843389004, LAP LAMBERT Academic Publishing.*
3. *पं. अमरनाथ (2008), इन्दौर घराने के मसीहा पं0 अमरनाथ मेमोरियल फाउण्डेशन नई दिल्ली*
4. *MEER WIM VANDER (1980), "Hindustani Music in 20th Century"] Martinus Nijhoff Publisher Pg. No. 52*
5. *पं. अमरनाथ (2020), "The Dictionary of Hindustani Classical Music" Penguin Books*
6. *रमन सरस्वती (2014), "The Mystery of Sound" ISBN 978-1-4969-9224-6, Author House, Page No. 39*